परमात्मा एक है... विश्व के सभी धर्मों में कहीं न कहीं ज्योति का उल्लेख अवश्य मिलता है

सबका मालिक एक, फिर बंटा हुआ संसार क्यों ?

विश्व का कोई भी धर्म हो... हिंदू-मुस्लिम, सिख, ईसाई, पारसी, बौद्ध सभी के धर्मग्रंथों में कहीं न कहीं एक सर्वोच्च सत्ता, निराकार, परम ज्योति का उल्लेख किया गया है। इससे स्पष्ट है कि दुनिया के तमाम धर्म, संप्रदाय और समुदाय का मालिक एक है तो फिर ये संसार क्यों बंटा हुआ है। धर्म के नाम पर खून-खराबा क्यों?, सभी धर्म का मूल शांति और उस परम सत्ता की प्राप्ति ही मूल है तो मजहब के नाम पर इतनी अशांति क्यों? ये वो सवाल हैं जिन पर हमें गंभीरता से सोचने की जरूरत है। हमारी भारतीय संस्कृति की पहचान भी वसुधैव कुटुम्बकम् की रही है।

परमात्मा शिव कौन हैं ?

33 करोड़ देवी-देवताओं के रचनाकार, देवो के भी देव महादेव, ब्रह्मा, विष्णु, शंकर के भी रचयिता त्रिमूर्ति, तीनों लोकों के मालिक त्रिलोकीनाथ, तीनों कालों को जानने वाले त्रिकालदर्शी, त्रिमूर्ति ही परमपिता परमात्मा शिव हैं। वह विश्व की सभी आत्माओं के परमपिता भी हैं। शिव जन्ममरण से न्यारे हैं। उनका जन्म नहीं होता बल्कि परकाया प्रवेश होता है। वह अजन्मा, अभोक्ता हैं। वह सुख के सागर, शांति के सागर, प्रेम के सागर, पवित्रता के सागर, आनंद, ज्ञान और शक्ति के सागर है।

कहां रहते हैं परमपिता परमात्मा शिव...?

इस सृष्टि में तीन लोक होते हैं। पहला स्थूल वतन, दूसरा सूक्ष्म वतन और तीसरा मूल वतन अर्थात् परमधाम (ब्रह्मलोक, शांतिधाम या निर्वाणधाम)। मनुष्य सृष्टि अथवा स्थूल लोक जिसमें हम निवास करते हैं। इसे कर्म क्षेत्र भी कहते हैं। सूर्य-चांद से भी पार एक अति सूक्ष्म (अव्यक्त) लोक है। इस लोक में पहले सफेद रंग के प्रकाश तत्व में ब्रह्मापुरी, उसके ऊपर सुनहरे लाल प्रकाश में विष्णुपुरी और उसके भी पार शंकरपुरी है। इन तीनों देवताओं की पुरियों को संयुक्त रूप से सूक्ष्म लोक कहते हैं। सूक्ष्म लोक से भी ऊपर एक असीमित रूप से फैला हुआ तेज सुरहरे लाल रंग का प्रकाश है, इसे अखंड ज्योति ब्रह्म तत्व कहते हैं। ज्योतिर्बिन्दु त्रिमूर्ति परमपिता परमात्मा शिव और सभी धर्मों की आत्माएं इसी लोक में निवास करती हैं। इसे ब्रह्मलोक, परमधाम, शांतिधाम, निर्वाणधाम, मोक्षधाम अथवा शिवपुरी कहा जाता है। यही परमपिता शिव का वास्तविक निवास स्थान है।

'शिवलिंग' पर तीन रेखाएं ही क्यों...?

शिवलिंग पर तीन रेखाएं परमात्मा द्वारा रचे गए तीन देवताओं का ही प्रतीक हैं। शिवलिंग पर तीन रेखाएं और एक आंख दिखाई जाती है। साथ ही तीन पत्तों का बेलपत्र चढ़ाया जाता है। इसका अर्थ है शिव तीनों लोकों के स्वामी हैं। तीन पत्तों का बेलपत्र परमात्मा के ब्रह्मा, विष्णु, शंकर के भी रचयिता होने का प्रतीक है।

सभी आकर वर्सा लें

हमें यह लगता ही नहीं कि हम परमात्मा के साथ रह रहे हैं, क्योंकि परमात्मा ने हमारी पालना बिल्कुल मां-बाप जैसी की है। परमात्मा के साथ जीवन सफल हो गया। सभी को आकर परमात्मा से अपना वर्सा लेना चाहिए।

राजयोगिनी दादी हृदयमोहिनी, अतिरिक्त मुख्य प्रशासिका

जीवन सफल हो गया

शिवबाबा ने ब्रह्मा बाबा के तन में आकर नई दुनिया की स्थापना का कार्य शुरू किया वह किसी अजूबे से कम नहीं था। मुझे खुशी है सारा जीवन परमात्मा द्वारा रचे हुए यज्ञ में सफल हो गया।

- राजयोगिनी दादी रत्नमोहिनी, संयुक्त मुख्य प्रशासिका, ब्रह्माकुमारीज़

हर पल साथ मिला

परमात्मा के बारे में हमने सिर्फ सुना था कि वह इस रूप में आते हैं, ऐसे मिलते हैं। मैं भाग्यशाली हूं कि मुझे परमात्मा मिलन का ही नहीं, बल्कि हर पल उनके अंग-संग रहने का अवसर मिल रहा है।

- ब्रह्माकुमार निर्वैर, महासचिव, ब्रह्माकुमारीज़

शिवरात्रि का आध्यात्मिक रहस्य...

विश्व की सभी महान विभूतियों के जन्मोत्सव जन्मदिन के रूप में मनाए जाते हैं, लेकिन परमात्मा शिव की जयंती को शिवरात्रि कहा जाता है, आखिर क्यों? इसका अर्थ है परमात्मा जन्ममरण से न्यारे हैं। वह अलौकिक जन्म लेकर अवतरित होते हैं। जब- जब इस सृष्टि पर पाप की अति, धर्म की ग्लानि और पूरी दुनिया दुःखों से घिर जाती है तो गीता में किए अपने वायदे अनुसार परमात्मा इस धरा पर अवतरित होते हैं और पुनः सहज राजयोग की शिक्षा देकर सतधर्म की स्थापना का दिव्य करते हैं।

सभी धर्मों में है ज्योति की मान्यता

मुस्लिम... अल्लाह को कहा- नूर, तेजोमय

मुस्लिम धर्म में मान्यता है जीवन में एक बार मक्का मदीना की यात्रा अवश्य करनी चाहिए। इस पवित्र पत्थर का दर्शन मुसलमानों के लिए आवश्यक माना गया है। वो भी निराकार है, जिसकी कोई साकार आकृति नहीं है। उसको ही संग-ए-असवद और अल्लाह कहा। उसे नूर-ए-इलाही भी कहते हैं। नूर-ए-इलाही अर्थात् वो नूर, वो तेज, वो तेजोमय स्वरूप जिसको हमने ज्योतिर्लिंगम वा ज्योतिस्वरूप कहा है। ज्योति माना ही तेजा। अतः सभी ने किसी न किसी रूप मे परमसत्ता की शक्ति को स्वीकारा है।

सिख धर्म... एक ओंकार निराकार

सिख धर्म में श्रीगुरुनानक देवजी ने कहा है 'एक ओंकार निराकार'। उन्होंने बड़े स्पष्ट शब्दों में परमात्मा के सत्य स्वरूप का वर्णन किया है। 'वो निराकार है, निर्वैर है, सतनाम् है' जिसको काल कभी नहीं खा सकता। यह सब महिमा गुरुवाणी में लिखी हुई है। हमने ज्योतिर्लिंगम कहा उन्होंने निराकार, निर्वैर, सत्यनाम कहा। साथ ही उन्हें हमेशा ऊपर की तरफ अंगुली करते दिखाया गया है।

ईसाई... गॉड इज लाइट : जीजस

जीजस ने परमात्मा को लाइट कहा। उन्होंने कहा 'गॉड इज लाइट', आई एम द सन् ऑफ गॉड। आज भी चर्च में एक बड़ी मोमबत्ती जलाते हैं जो परम ज्योति परमात्मा का ही सूचक है। ओल्ड टेस्टामेंट में दिखाया है कि जब हजरत मूसा शिनाई पर्वत पर गए तो उन्हें परमज्योति का साक्षात्कार हुआ, जिसे देख हजरत मूसा ने कहा - जेहोवा। वहीं जापान में तीन फीट की ऊंचाई पर स्टैंड पर एक लाल पत्थर को रखकर ध्यान करते हैं, जो शिकोनिजम सेक्ट वाले हैं वो इस पत्थर को करनी का पत्थर कहते हैं। इसे चिंकोनसेंकी कहा जाता है।

श्रीकृष्ण... कुरुक्षेत्र में शिवलिंग की पूजा

महाभारत युद्ध के पहले कुरुक्षेत्र के मैदान में श्रीकृष्ण ने भी ज्ञानेश्वर, सर्वेश्वर की स्थापना कर उस परमपिता, सर्व शक्ति वान, निराकार शिव की पूजा-अर्चना की और उस शक्तियों के दाता से शक्ति प्राप्त कर युद्ध के मैदान में उतरे। श्रीकृष्ण ने पांडवों से भी शिव की पूजा करवाई। इसके बाद वह युद्ध के मैदान में उतरे और कौरवों पर विजय प्राप्त की। शिव को भोलेनाथ भी कहा गया है, क्योंकि वह सहज ही प्रसन्न होने वाले हैं।

श्रीराम... रामेश्वरम् में शिवलिंग की पूजा

परमात्मा शिव की पूजा स्वयं श्रीराम ने भी की है, जो वर्तमान समय में रामेश्वरम के रूप में पूजा जाता है। शिव श्रीराम के भी आराध्य हैं। यदि श्रीराम भगवान होते तो उन्हें ज्योतिर्लिंगम की पूजा करने की क्या आवश्यकता हुई? वह जानते थे रावण को अपनी जिस शक्ति का अभिमान है वह उसने परमात्मा की तपस्या करके ही प्राप्त की थी। शिव की शक्ति के सामने मुकाबला करने के लिए शिव की शक्ति से ही विजयी हो सकते हैं।

शंकरजी... हमेशा लगाते हैं शिव का ध्यान

हम शंकरजी को हमेशा ध्यान की मुद्रा में देखते हैं। इससे स्पष्ट है उनके भी कोई आराध्य या देव हैं, जिनका वह स्मरण करते रहते हैं। परमात्मा शिव, शंकर के भी रचयिता हैं। वह शंकर द्वारा इस आसुरी सृष्टि का विनाश कराते हैं। शंकर जी की ध्यानमुद्रा में योग की वह अवस्था बताई है। अर्धनेत्र खुले और अर्ध पद्मासन या सुखासन का आसन, जिसमें वह निराकार परमात्मा का ध्यान लगाते हैं।

स्वामी विवेकानंद...परमात्मा ज्योति स्वरूप

स्वामी विवेकानंद ने भी अपने शिव स्त्रोत में शिव की वंदना इन शब्दों में की है - सृष्टि की स्थापना, विनाश और पालन करने वाले हैं, जो अपरंपार महिमा वाले हैं। उन पारलौकिक परमात्मा को मेरे जीवन की श्रद्धा-ज्योति समर्पित है। परमात्मा शिव निराशा और अंधकार से सदा परे ज्योतिस्वरूप हैं। उन्हें अखण्ड प्रभु-स्मृति द्वारा ही अनुभव किया जा सकता है। वे ही कलियुगी, विकारी सृष्टि के विकार मिटाने वाले प्रभु हैं। उन्हें मेरा प्रणाम है।

पारसी... रोम में प्रियपस कहा

पारसियों के अग्यारी में होली फायर मिलता है। पारसी जब भारत आए तो जलती हुई अग्नि का अंश लेकर आए। वह आज भी जब नई अग्यारी की स्थापना करते हैं तो जलती हुई ज्योत का अंश स्थापन करते हैं, जो परमज्योति का प्रतीक है। मिस्र में शिव की पूजा सेवा नाम से तथा फैजी देश में शिव को सेवा या सेवाजिया नाम से पूजते हैं। रोम में शिवलिंग को प्रियपस कहा जाता है। इटली में गिरजाघर में शिवलिंग की प्रतिमा रखी जाती रही है।

बड़ा सच... शिव की रचना हैं शंकर, ब्रह्मलोक के हैं निवासी

शंकरजी के भी पिता हैं 'शिवजी'

शिव और शंकर में महान अंतर है। शिवलिंग परमात्मा शिव की प्रतिमा है। परमात्मा निराकार ज्योति स्वरूप है। शिव का अर्थ है कल्याणकारी और लिंग का अर्थ है चिह्न। अर्थात् कल्याणकारी परमात्मा को साकार में पूजने के लिए शिवलिंग का निर्माण किया गया। शिवलिंग को काला इसलिए दिखाया गया क्योंकि अज्ञानता रूपी रात्रि में परमात्मा अवतरित होकर अज्ञान-अंधकार मिटाते हैं। परमपिता परमात्मा शिव देवताओं एवं समस्त मनुष्यात्माओं के पिता हैं। उनका दिव्य अवतरण होता है। वे अजन्मा, अभोक्ता, अकर्ता और ब्रह्मलोक के निवासी हैं।

शिव और शंकर में उतना ही अंतर है जितना कि पिता और पुत्र में। शंकर का आकारी शरीर है। शंकर परमात्मा शिव की रचना है। शिव ने शंकर को इस कलियुगी सृष्टि के विनाश के लिए रचना की है। यही वजह है शंकर हमेशा शिवलिंग के सामने तपस्या करते हुए दिखाए जाते हैं। वह हमेशा ध्यान की मुद्रा में रहते हैं। यदि शंकर स्वयं भगवान होते तो उन्हें ध्यान करने की क्या जरूरत है? ध्यानमग्न शंकर की भाव-भंगिमाएं एक तपस्वी के अलंकारी रूप हैं। शंकर और शिव को एक समझ लेने के कारण हम परमात्म प्राप्तियों से वंचित रहे।